ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | JANUARY - 2022

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

कन्नड़ साहित्य में अभिनवपंप कवि 'नागचन्द्र' रचित जैन रामायण 'रामचन्द्र चरित पुराण'

डॉ. श्रीधर पी डी
विभागाध्यक्ष्य – हिन्दी अध्ययन विभाग,
क्रिस्तु जयन्ती कालेज, के. नारायणपुर , कोत्तनूर पोस्ट, बेंगलूरु.

कन्नड भाषा में रामकथा का मूल :

कन्नड़ साहित्य में 'आस्थान कवि' यानी दरबारी कवि कहने वाले श्रेष्ठ रचनाकार अपने आश्रय दाता को नायक के रूप में प्रस्तुत कर काव्य रचना करते थे। साथ ही अपना धर्म के प्रति आस्था दर्शाने हेतु एक ग्रंथ लिखकर समर्पित करते थे। इसी श्रेणी में सृजन कार्य करनेवाले, अभिनवपंप के नाम से प्रसिद्ध नागचन्द्र ने जैन धर्म के 19 वाँ तीर्थंकर मल्लिनाथ के जीवन चरित्र पर आधारित 'मल्लिनाथ पुराण' नामक एक महाकाव्य लिखा है। नागचन्द्र की एक और कृति है 'रामचन्द्र चरित पुराण' यह राम के जीवन चरित्र पर आधारित है। यह महाकाव्य 'पंप रामायण' नाम से भी प्रसिद्ध है। इस महाकाव्य को गद्य और पद्य मिश्रित चंपू साहित्य प्रकार में रचा गया है।

लोक-कथा एवं परंपराओं के साथ'रामायण' भारत के अनेक संस्कृतियों में महाकाव्य के रूपों में विराजमान है। भारत के दसों दिशाओं में राम कथा जनजनित है। इसी कारण जैन, बौद्ध, वैदिकादि परंपराओं में भी रामायण उपलब्ध हैं। भारत के सभी संप्रदाय वाल्मीकि रामायण को ही मूल मानकर अपनी परम्परा और संप्रदायानुसार राम कथा को अपने काव्यों में अलंकृत करते आ रहे हैं। मगर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सभी परंपरा या संप्रदायों का मूल लोक साहित्य होता है। जैन साहित्य में रामायण रचना से संबन्धित प्रमुख दो परंपराओं को देख सकते हैं। एक विमलसूरी परंपरा और दूसरी गुणभद्र परम्परा। विमलसूरी परंपरा में प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत और कन्नड़ भाषाओं में रामाख्यान की कथाएँ हमें उपलब्ध हैं। विमलसूरी का पउमचरिय, संघदास का वसुदेव हिंडी, हरिभद्र के धूर्ताख्यान में निहित रामकथाएँ, चउमुह, स्वयंभूदेव और त्रिभुवनस्वयंभू पउमचरिय, शीलाचार्य और अनुत्तर वाग्मि कीर्तिधर के रचित चउपन्नमहापुरिचरिय में निहित रामायण की कथाएँ प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं में उपलब्धहैं। इन सब रामकथाओं का रचना काल तीसरी सदी के पूर्व से लेकर नवीं सदी तक माना गया है।

दसवी सदी के बाद संस्कृत भाषा में विमलसूरी परंपरा में ही रविषेण के पद्मपुराण, हरिषेण के कथाकोश, अमितगति के धर्म परीक्षा और हेमचन्द्र के त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित ग्रंथों में रामकथा विश्लेषण देख सकते हैं। दसवी सदी में रचित नागचंद्र के रामचन्द्र चरित पुराण को भी विमलसूरी परंपरा का माना जाता है। इस विमलसूरी परंपरा के साथ ही इसवीं सन्878 में गुणभद्र संस्कृत भाषा में उत्तरपुराण की रचना करता है। इसवीं सन् 965 में पुष्पदंत अपभ्रंश भाषा में महापुरण की रचना करता है। दसवीं सदी में कन्नड़ भाषा में चावुंडराय द्वारा चवुंडरायपुराण रचना होती है। बारहवीं सदी के अंत में बंधुवर्म जीवसंभोधन ग्रंथ की रचना करतें हचौदहवीं सदी में गुणभद्र परंपरा के नागराज पुण्यास्रव की रचना करते हैं जिनमें राम कथा का विश्लेषण देख सकते हैं।"[1]

जैन परंपरा में जैन धर्म के तत्व और संप्रदायों के अनुसार रामायण की कथा का विश्लेषण किया गया है। विमलसूरी जैन श्वेतांबर परंपरा से संबन्ध रखते हैं तो, गुणभद्र दिगंबर परंपरा का प्रतिपादन करते हैं। नागचन्द्र अपने रामचंद्र चरित पुराण में श्वेतांबर परंपरा के पउमचरिय कथा वस्तु का अनुसरण करने पर भी अन्य रामायण की परंपराओं का त्याग नहीं किया है।

रचना काल एवं उद्देश्य :

उन दिनों में दक्षिण कर्नाटक में होय्सळ राजवंश के विनयादित्य और एरेयंग इन दोनों विक्रमादित्य के सार्वभौमत्व को मान चुके थे। बारहवीं सदी में कर्नाटक में जैन धर्म राजाश्रय और उदारता को प्राप्त हुआ था। आश्चर्य की बात यह थी कि जैन धर्म की इस उन्नती की स्थिति में भी नागचन्द्र किसी राजा के आश्रय में न था। इसका कारण नागचन्द्र की स्वतंत्र प्रवृत्ति भी हो सकती है। तत्कालीन धार्मिक स्वतंत्रता, संस्कृत प्रभावलय से बचकर उत्थान की ओर अग्रसर कन्नड भाषा का प्रभाव प्राय: नागचन्द्र को आकर्षित किया होगा। उन दिनों हळेगन्नड यानी प्राचीन कन्नड के सभी काव्य जैन काव्यों के नाम से सुविख्यात हुए थे। कुल मिलाकर कन्नड साहित्य में अंकित पंपपूर्वयुग और पंपयुग का व्यापक अनुभव और पूर्व रचना धर्मी परंपराएँ नागचन्द्रके अपने काव्य रचना के प्रेरणा स्रोत बन गये थे।

नागचंद्र का रामचंद्र चरित्र पुराण :

'अहिंसा परमो धर्म:' यह जैन धर्म का मूल मंत्र है। जिसमें भक्ति, नम्रता, शांति, सौजन्य तथा संस्कार जैसे आदि गुणों का वर्णन है। नागचंद्र के रामचंद्र चरित पुराण में इन सभी विचारों का समागम और समन्वय हुआ हैं। इस रामचंद्र चरित पुराण में कभी भी काव्य की भाषा, संवाद और विचारों में कभी कड़वापन, क्रूरता, भय, आक्रमण, अशांति जैसे मन को ठेस पहुंचाने वाले विचारों का वर्णन नहीं हुआ है। रामचंद्र चरित पुराण के हर एक भाग में पाठकों को विशेष प्रकार का विनय के साथ विनम्र भावना दर्शित होता है। नागचंद्र का जैन धर्म में निहित भक्ति का आभास हमें उसके संपूर्ण काव्य में परिलक्षित होता है। जैन धर्म के प्रति उसकी यह विनम्र श्रद्धा अन्य धर्मों के प्रति अवहेलना की भावना नहीं है। नागचंद्र सभी धर्मों का सम्मान करते हुए अपने काव्य में रामायण की कथावस्तु को जैन तत्व एवं परंपरा के अनुसार पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करने की कोशिश की है। उसके इस प्रस्तुति में कभी भी अन्य धर्मों के ओर तिरस्कार दिखाई नहीं देता है। नागचंद्र ने इस रामचंद्र चरित पुराण में जैन मत के सदुद्देश्योंका वर्णन किया है। रामायण से संबन्धित पूर्व पुराणों की आभा में प्रवाहित होकर नागचन्द्र अपनी काव्य रचना नहीं की है। कन्नड़ के अन्य रामायण के रचनाकार महा कवि पंप और रन्न दोनों लौकिक भावनाओं से ओतप्रोत होकर अपनी काव्य रचना की है। नागचन्द्र अपने इस काव्य में अध्यात्म एवं मुक्ति मार्ग को सूचित करते हुए काव्य की प्रस्तुति की है। इस काव्य की एक और विशेषता है कि कथावस्तु में कहीं भी किसी भी संदर्भ में दूषण का भाव दिखाई नहीं देताहै।

कवि के वैयक्तिक जीवन की ओर हम दृष्टिपात करें तो नागचंद्र का चरित्र एक अनमोल सुसंस्कृत एवं परिमार्जित रहा होगा। उनकी काव्य रचना शैली में नागचंद्र की बुद्धिमत्ता चित्रकला, संगीत और शिल्प कला में दिखाई देता है। कवि की कुशलता और रुचि काव्य के पठन करने पर दिखाई देता है। अनेक कलाओं में पारंगत नागचंद्र काव्यालंकार प्रवीण कविके योग्य प्रतिभा, काव्य कला का ज्ञान, सेवा मनोभाव सहित निरंतर अध्ययनरत था। अपने समकालीन रचनाकारों के समान राग-द्वेष के कारण अपनी कृति की रचना नहीं की थी। कुल मिलाकर देखा जाए तो नागचंद्र की रामचंद्र चरित पुराण की मूल संवेदना ही शांत रस है। नागचन्द्र के अभिप्राय में कहा जाए तो किसी भी महाकाव्य के लिए पवित्र विषय के साथ चरित्रवान नायक की आवश्यकता होती है-

विषयमोंप्पदोडे आवुदं अप्पलार्कुमे-[2]

यहाँ सहज ही यह प्रश्न उठता है कि, कवि अपनी काव्य की रचना करते समय उसके मन की उतार-चढ़ाव से प्रेरित होकर विसंगतियों को काव्य में भरना सही नहीं माना है। उसके बदले में लोक हित को ध्यान में रखकर कवि अपनी श्रेष्ठ रचनाधर्म को निभाते हुए सभी को शांति प्रदान करने वाले सदुपयोगी तथा उपदेशी काव्य रचना को ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य माना है। रचनाकार के लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए एक ओर भगवतगीता में कहा है कि-

"अनुद्वेगकरं वाक्यम् सत्यं प्रियहितंचलत्"[3]

इसका अर्थ शांत रहते हुए किसी भी प्रकार के उद्वेग के बिना हित प्रदान करनेवाले, सत्य को प्रतिष्ठापित करनेवाले, प्रिय काव्य की रचना करना चाहिए। कवि नागचंद्र भी इसी तत्व-विचार का परिपालन करते हुए अपने 'रामचंद्र चरित पुराण' की रचना की है। उदात्त विनय और विनम्रता को अपनाकर नागचंद्र 'मल्लिनाथ पुराण' और 'रामचंद्र चरित पुराण' इन दोनों में सुसंस्कार उपदेश सहित चरित्रों की सृष्टि की है। रामचंद्र चरित पुराण के सभी पात्र अच्छे संस्कार वाले हैं।नागचंद्र की यह सोच रामायण के नायक श्रीराम से लेकर प्रति नायक रावण और उसके संपूर्ण परिवार के पात्रों को भी 'रामचंद्र चरित पुराण' में विनम्र दिखाई देते हैं।

नागचंद्र के चित्रित कोई भी पात्र अशिक्षित, घमंडी या टेढ़ा व्यक्तित्व वाला दिखाई नहीं देते हैं। नागचंद्र अपनी भावनाएँ, आदर्श और इच्छानुसार सभी पात्रों का चयन किया है।रामचन्द्र चरित पुराण के अध्ययन करने पर सारे पात्र और घटनाएं पाठकों के लिए हृदयस्पर्शी और आत्मीय हो जाते हैं। काव्य में निहित प्रत्येक घटनाएँ हमें एक शांतलोक की ओर अग्रसर करवा देते हैं। नागचंद्र की यह

रचना शैली अहिंसात्मक प्रशांत सुख की ओर आकर्षित करता है। स्वधर्म में आस्था रखने वाला नागचंद्र अपने इस सरल काव्य में सहानुभूति और संवेदना के साथ विशाल हृदय को प्रस्तुत करता है। इन सभी उपरोक्त विचारों की विमर्श करने पर हम नागचंद्र को एक नया विनयपूर्ण और रसिक व्यक्तित्व वाला रचनाकार मान सकते हैं।

नागचन्द्र अपने आप को 'अभिनवपंप' नाम से संबोधित करते थे। इसका कारण उनकी रचना 'रामचंद्र चरित पुराण' कन्नड़ भाषा साहित्य के क्षेत्र में 'पंपरामायण' के नाम से सुविख्यात है। पंपरामायण एक जैन पुराण ग्रंथ से भी प्रसिद्ध है। पुराण की कथा में परिवर्तन करके उसका पुनः प्रस्तुति में कवि को उतनी स्वतंत्रता नहीं मिलती है। इसलिए उस रचना में कवि कुशलता के प्रति अपेक्षा रखना और उसके आधार पर काव्य रचना की प्रतिभा को मापना उतना सामंजस्यपूर्ण नहीं है। रामचंद्र चरित पुराण की विशेषता यह है कि विशाल कथावस्तु को कवि अपने संग्रहित कुशलता में बांध के रखा है। नागचंद्र अपने काव्य रचना का उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि-

"मृदुपदबंधमं बगेय भावद मैय्सिरियं, रसप्रवाहद नेलेवेर्चं।"[4]

इसका अर्थ यह है कि अति विस्तारपूर्ण रामायण को कुशलता, सहृदय के साथ संग्रह करके रसप्रवाह को बरकरार रखना प्रशंसनीय कार्य है। रामायण के संबंध में हर एक कवि का रचित रामायण अपनी विशेष श्रेष्ठता को दर्शाता है। प्रत्येक कवि अपनी ही शैली में रामकथा का पुनः प्रस्तुतीकरण करता है। अभिप्राय भेद सहित देश-प्रदेश, कालानुसार भारतीय साहित्य और संस्कृति परंपराओं में अनेकों रामकथा काव्य रचित हुए हैं। सामान्यतः सभी रामायण में राम सीता विवाह, राम का वनवास, रावण से सीता का अपहरण, रावण वध, राम पट्टाभिषेक जैसे आदि घटनाओं का वर्णन मिलता है। भारत की सनातन हिन्दूधर्म सहित सभी धर्मों में रामायण के विषय वस्तु पात्र और घटनाएं उपलब्ध होते हैं।

इसी कडी में जैन रामायण सहित अनेक बौद्ध जातक कथाओं में भी रामकथा के अंश उपलब्ध होते हैं।अपने अपने धर्म, काल, क्षेत्र और भाषानुसार परिवर्तनों के साथ सभी भाषाओं के सारस्वा क्षेत्र में रामायण अपनी छवी प्रस्तुत कर चुकी है और करती जा रही है। प्रत्येक रामायणों में विशेष अंतर और वैशिष्ट्य दिखाई देते हैं। नाम तो अनगिनत हैं, जैसे – अद्भुत रामायण, आनंद रामायण, कंब रामायण, अध्यात्म रामायण, तुलसी रामायण, कृत्तिबासन रामायण, तोरवे रामायण आदि। रचना काल और उत्तर भारत, दक्षिण भारत, काश्मिरी, बंगाली प्रदेशों के आधार पर भी इन रामकथाओं के अनेक पाठांतर उपलब्ध हैं।

ग्रंथस्थ रामायणों में वाल्मीकि रामायण ही अत्यंत प्राचीन दिखाई देता है। वाल्मीकि पूर्व रामायण की कथा जनमानस में लोकप्रिय रहा होगा। अनेकों भागों में अनेकों रूपांतरों में इसका प्रचलन रहा होगा। विद्वानों का मत है कि वाल्मीकि अपनी प्रतिभा से इस कथा को एक महाकाव्य का रूप दिया। कुछ विद्वान मानते हैं कि जैन रामायण के आधार वाल्मीकि रामायण से पूर्व उपलब्ध रहा होगा। उपलब्ध परंपराओं के आंकड़ों को ग्रहण करके ही जैन कवियों ने जैन रामायण की रचना कर चुके होंगे। यह भी एक मान्यता है।

उपलब्ध प्रथम जैन रामायण प्राकृत भाषा का विमल सूरी का पउमचरियं है। संशोधक इसकी रचनाकाल प्रथम सदी मानते हैं। विमलसूरी कहता है कि मुझे यह कथा पूर्व लोक कथा परंपरा से प्राप्त हुई है। विमल सूरी के काल में ही वाल्मीकि रामायण की कथा जनमानस में जनप्रियता प्राप्त कर चुकी थी। पउमचरियं ग्रंथ में ही इन सब के लिए आधार उपलब्ध होते हैं। पउमचरियं ग्रंथ में गौतम गणधर ने श्रेणिक महाराज को यह कथा बताई, ऐसा उल्लेख है। इस संवाद में श्रेणिक महाराज वाल्मीकि रामायण में निहित कुछ असंगत विषयों को प्रश्न किया है। रावण के क्या दस चेहरे हो सकते हैं? बंदर क्या इतनी शक्तिशाली है जो राक्षसों को हरा सकते हैं? कुंभकरण छह महीनों तक सो सकता है क्या? श्रेणिक महाराज के इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए गौतम गणधर कहते हैं कि केवलियों से सुना रामायण की सत्य कथा हम बताते हैं। कुवादी और कुकवी इस प्रकार कुछ कह सकते हैं। सातवीं सदी में रविषेण आचार्य संस्कृत भाषा में पद्मचरित रामायण की रचना करता है। इसमें भी उपरोक्त विषय एवं संवाद दर्शित होते हैं।

"भगवन् पद्मचरितं श्रोतु मिच्छामि तत्वत:
उत्पादितान्यथैवास्मिन् प्रसिद्धि: कुमतानुगै:"[5]

इस प्रकार श्रेणिक महाराज के प्रश्न के उत्तर में गौतम गणधर कहते हैं कि –

"रावणो राक्षसोनैव न चापि मनुजाशन:
अलीकमेव तत्सर्वं यद्वदंति कुवादिन:"[6]

विमलसूरी और रविषेण रामायणों में कुछ जगहों में अंतर रहने पर भी दोनों एक ही परंपरा के लक्षित होते हैं। कन्नड भाषा के चावुंडराय पुराण और नागराज के पुण्यास्रव में आनेवाले रामकओं को था इस परंपरा का माना गया है। नागचन्द्रअपने रामचन्द्र चरित पुराण में विमलसूरी संप्रदाय का अनुसरण करता है। रविषेण भी उसी संप्रदाय का अनुसरण किया है। नागचन्द्र संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं में पारंगत था। इस कारण नागचन्द्र विमलसूरी और रविषेण इन दोनों के पथ पर चलकर अपनी रामचन्द्र चरित पुराण की रचना करता है। इसी लिए वहाँ के संदर्भ और चरित्र एक ही लगते हैं। दोनों जैन पुराण होने के कारण दोनों में जैनाचारों का वातावरण परिलक्षित होता है।

सामान्यत: हमारे परिचित रामायण की मूल कथा और जैन रामायण की कथा में अनेक अंतर दिखाई देते हैं। इन विभिन्नताओं को रेखांकित करना और उनका विश्लेषण करना आवश्यक है। प्रचलित वाल्मीकि रामायण और जैन रामायाणों में निम्नलिखित विभिन्नताओं को देख सकते हैं

1. जैन रामायण में सभी पात्र अहिंसा का पालन करनेवाले जैन धर्मी हैं।
2. राम विष्णु का अवतार नहीं है, राम और लक्ष्मणों को जैन धर्मावलंबी बलदेव और वासुदेव माना जाता है।
3. रावण का वध राम से नहीं लक्ष्मण से होता है।
4. सीता का जन्म पृथ्वी से नहीं हुआ था। उसका प्रभामंडल नाम का एक बड़ा भाई भी था।
5. राम-लक्ष्मण इन दोनों की श्रेष्ठता को देखकर भरत विषाद प्रकट करता है। वाल्मीकि रामायण का उदात्त चरित्रवान भरत का वर्णन जैन रामायण में नहीं है।
6. रावणादि उनके वंशज राक्षस कुल के नहीं हैं। वे नरभक्षक नहीं हैं। रावण दशानन नहीं है। वह एक सुन्दर पुरुष है।
7. सुग्रीव और उनके वंशज वानर नहीं हैं, वानर ध्वज धारण करनेवाले हैं।
8. जैन रामायण में राम द्वारा वालि वध प्रसंग ही नहीं आता है।
9. जांबवंत भालू नहीं है। वह राम के सम्मुख रावण के गुण और अतुलनीय पराक्रम का वर्णन करता है।
10. यहाँ शंबुक शूद्र तपस्वीनहीं है। वह रावण की बहन चंद्रनखी का पुत्र है। गलती से लक्ष्मण उसको मार देता है।
11. जैन रामायण में रामसेतु का उल्लेख नहीं है। आकाशगामिनी विद्या से राम सेना लंका गमन करती है।
12. जैन रामायण में हनुमान, राम, लक्ष्मण और रावण के पत्नियों के प्रति उल्लेख हैं।
13. रावण की राणी मंडोदरी अपने पति की सहायता करते हुए सीता का मनपरिवर्तन करने का प्रयत्न करती है।
14. सीता का वाल्मीकि आश्रम जाकर लव-कुश जुड़वा बच्चों को जन्म देने का प्रसंग इसमें नहीं है।
15. अश्वमेध याग का प्रसंग नहीं है।
16. सीता अंत में जैन सन्यासिनी की दीक्षा लेने का प्रसंग है।
17. जैन रामायण में अनेकों स्त्री पुरुष पात्र जैन सन्यास दीक्षा स्वीकार करते हैं। - [7]

रावण को प्रतिवासुदेव के रूप में देखा गया है। जैन धर्मानुसार जीवन में होने वाले छोटीसी-छोटी घटना भी मोक्षगामी जीव को गलत राह पर ले जा सकता है। इस स्थिति में जैन आचरणानुसार क्षमा और प्रायश्चित्तद्वारा जीव अपनी आत्मा को परिशुद्ध कर फिर से मोक्ष मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। यही जैन धर्म की विशेष दार्शनिकता है। जैन विचारानुसार रावण अपने जीवन में परिपक्व बनकर भवावलियों में घूमकर शांति की ओर जाना रामचन्द्र चरित पुराण की विशेषता है। इस जैन पथ का विश्लेषण करते हुए लौकिक काव्य में निहित राग-द्वेश, कामना, प्रायश्चित्तादि मार्गोपायों से जीव शांत स्थिति की ओर बढ़ने का एक आदर्श इस काव्य में उपलब्ध होता है।

जैन मत तत्वों के आधार पर जैन रामायण की रचना की गई है। कारण स्पष्ट है मत के कारण रामायण की कथा में रूपांतरण आया है। अद्भुत रामायण में 'शाक्तेय मत' का प्रभाव है। अध्यात्म रामायण में 'अद्वैत दर्शन' का प्रभाव है। जैन धर्मानुयायी नागचन्द्र का रामचन्द्र चरित पुराण का उद्देश्य धर्मोपदेश करना है। वह अपनी काव्य में प्रतिज्ञा करता है कि –

"जगमं युगमं मन्वा
दिगळं कालस्वरूपं जिनरं च
क्रिगळं हलधर कृष्णा
दिगळं श्रीरामचरितदोळ् वर्णिसुवें।"[8]

पंप रामायण की कथावस्तु :

इक्ष्वाकु वंश का दशरथ उत्तर भारत में राज करता था। दक्षिण में रावण का एक चक्राधिपत्य था। रामचन्द्र चरित पुराण के अनुसार दशरथ के अपराजिता, सुमित्रा, सुप्रभा नामक तीन पत्नियों से राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न नामक पुत्र हुए। उधर मिथिला में जनक के प्रभामंडल नाम का पुत्र और सीता नाम की पुत्री हुई। राम जनकराज की सहायता करते हुए धनुर्भंग कर स्वयंवर में सीता से विवाह करता है। साथ में लक्ष्मण का भी विवाह होता है। इसको देखकर भरत के मन में मत्सर पैदा होता है। अपनी माता कैकेयी को दशरथ मिला वर का उपयोग कर राम को वनवास के लिए बाद्य करता हैं। वनवास के लिए निकले राम के साथ सीता और लक्ष्मण भी चलते हैं। रावण की बहन चन्द्रनखी के पुत्र शंबुक को लक्ष्मण गलती से हत्या कर देता है।

अपने पुत्र की हत्या का वैर लेने दंडकारण्य में राम लक्ष्मण के पास चंद्रनखी आती है। राम लक्ष्मण की सुन्दरता से वशीभूत होकर उनसे गंधर्व विवाह की प्रार्थना करती है। चन्द्रनखी के इस प्रस्ताव को देखकर सीता मुस्कुराती है। अपमानित चन्द्रनखी अपना भाई लंका के राजा रावण को राम से प्रतिकार लेने की प्रार्थन करती है। फिर रावण सीता का अपहरण करता है। जांबवन द्वारा वर्णित रावण के विरुद्ध युद्ध करने और विमोचन हेतु राम-लक्ष्मण, सुग्रीव की सहायता से सेना तैयार कर आकाश गामिनी विद्या से लंका प्रवेश करते हैं।

भुजबल, नीतिबल और विद्याबल प्रवीण रावण का पूर्व इतिहास का वर्णन इस पंप रामायण में किया गया है। रावण को पराक्रमी, अहंकारी, राजनीतिज्ञ और श्रेष्ठ जिनभक्त माना गया है। इतना प्रबल रावण को युद्ध में लक्ष्मण मारता है। फिर सीता के साथ राम अयोध्या में राम का राज्याभिषेक होता है। सामान्य प्रजा के बीच में चर्चित अपवाद से दूर होने के लिए राम फिर से गर्भिणी सीता का परित्याग करता है। रामाश्वकेध याग के घोडे को बाँधकर आगे सीता के लव और कुश नाम के पुत्र राम के विरुद्ध युद्ध कर विजयी हो जाते हैं। तब राम अपने बच्चों के रहस्य को जानकर सीता को पुन: स्वीकारना चाहता है। मगर सीता केशलोचन कर अग्नि प्रवेश करती है। दु:खित राम अपने भाई लक्ष्मण की मृत्यु के बाद उसके शव को 6 महिनों तक पीठ पर लादकर घूमता है। अंत में जटायु आदि राम को समझाते हैं। अंत में राम दीक्षा लेकर सिद्ध पदवी पा लेता है।

"पिरिदेनिसिर्द रामकथेयं किरिदागिरे देसी मार्गमं
बेरडरोळं रसंबडेदु पंडित मंडली मेच्चेनेर्पुवे
त्तिरलविरोधमागे कृतिवेर्वडे सत्कवि नागचन्द्रनं
तिरे पेरेरार् सरस्वति कुडल् पडेदर् वरमं कवीश्वरर्।" [9]

इस बृहद् राम कथा को रसयुक्तसंग्रहकर सत्कवि नागचन्द्र पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। साथ ही अपनी जिनभक्ति को स्पष्ट करते हुए अभिनवपंप नागचन्द्र अपने काव्यांत के पद में इस प्रकार कहता है-

"इदु परमजिनसमय कुमुदिनीशरश्चंद्र
बाळचंद्र मुनींद्र चरणनखकिरण
चंद्रिकाचकोरं भारतीकर्णपूरं श्रीमदभिनवपंप
विरचिमप्प रामचंद्रचरितपुराणदोळ्
परिनिर्वाण कल्याणोत्सव वर्णनं षोडशाश्वासं।"[10]

उपसंहार में यह कह सकते हैं कि- कन्नड भाषा सारस्वत लोक में नागचन्द्र का रामचन्द्र चरित पुराण जिनधर्म की महिमा एवं गुणगान करनेवाला महाकाव्य है। अभिमानवश नागचन्द्र स्वयं को 'अभिनवपंप' नाम से घोषित करता है। अपना सृजन कार्य लौकिक और धार्मिक दोनों के लिए परिपूर्ण समान समर्पित करता है। इसका कारण शायद तत्कालीन धार्मिक स्वतंत्रता और उसकी निजी सोच रही होगी। जिनधर्म का उपदेश ही उसके रचनाओं को मूलोद्देश और मन का आशय लक्षित होता है। इसी कारण नागचन्द्रअपने मल्लिनाथ पुराण और रामचन्द्र चरित पुराण दोनों में सम्मोहित होकर भक्तिलीन जिनस्तुति करता है। नागचन्द अपने काव्य में शांतरस को आनन्द का माध्यम बताने की कोशिश की है। वह कहता भी है- निनगे रसमोंदे शांतमे इसका अर्थ शांतरस ही उसके काव्य का ध्येय है। नागचन्द्र काव्यशक्ति में आदि कवि पंप से अपनी तुलना करते हुए जिनभक्ति में पंप से भी अधिक सफल दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. रामचन्द्रचरित पुराण, डॉ.आर्.सी. हिरेमठ. प्रस्तावना. पृ.सं. 7
2. नागचन्द्र, संपदित कन्नड़ कृति. वी.सीतारामय्य.पृ.सं.110
3. नागचन्द्र, संपदित कन्नड़ कृति. वी.सीतारामय्य.पृ.सं.111
4. नागचन्द्र, संपदित कन्नड़ कृति. वी.सीतारामय्य.पृ.सं.112
5. पउम चरिउ श्लोक सं - 3 पृ सं 17
6. पउम चरिउ श्लोक सं - 3 पृ सं 3-27
7. नागचन्द्र रामचन्द्र चरित पुराण विमर्शा, संपादक वी सीतारामय्य, पृ सं 115
8. रामचन्द्र चरित पुराण- नागचन्द्र 1-41
9. रामचन्द्र चरित पुराणं, संपादक- डॉ आर् सी हिरेमठ पृ सं 540
10. रामचन्द्र चरित पुराणं, नागचन्द्र संपुट, संपादक- डॉ शांतिनाथ दिब्बद, पृ सं 745